बाल विवाह मुक्त हमारा बिहार

दहेज मुक्त बिहार संकल्प हमारा

चंदा पुकारे

बाल विवाह से

संबंधित मुद्दों के प्रति नुक्कड़ नाटक के द्वारा सशक्त बनाने हेतू सन्दर्भ पुस्तिका

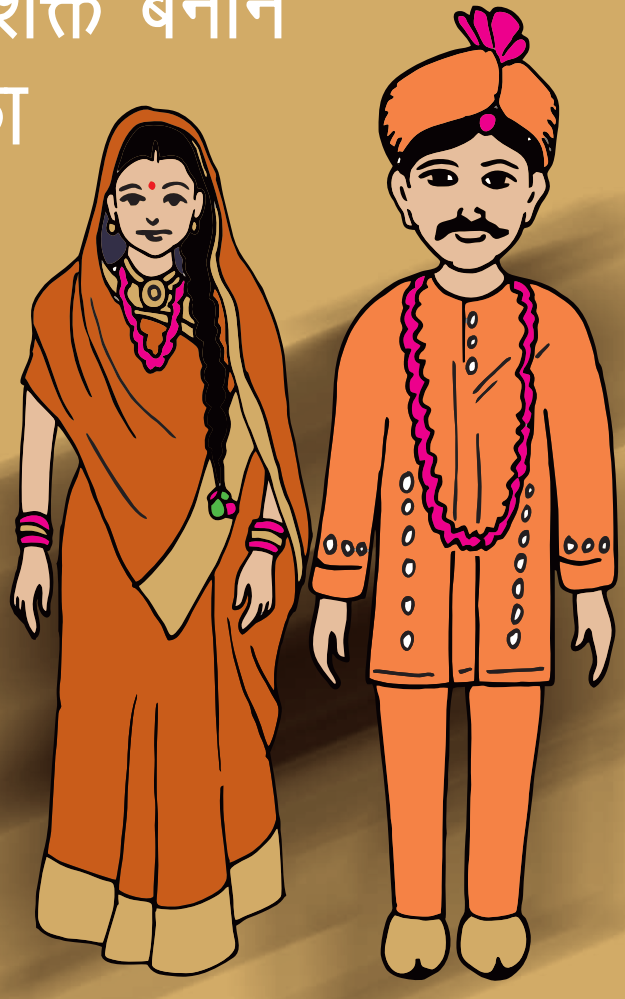

महिला विकास निगम, बिहार
समाज कल्याण विभाग

बिहार सरकार

सूचकांक

एक अवलोकन	5
नुक्कड़ नाटक की मुख्य विशेषताएं	5
संभावित आयोजन स्थल	5
दर्शकों का प्रकार	5
कार्यक्रम की अवधि	5
समुदाय से प्रतिक्रिया	5
नुक्कड़ नाटक आयोजित करने की प्रक्रिया	6
कार्यक्रम आयोजन से पहलेः	6
कार्यक्रम आयोजन के दिन	7
कार्यक्रम आयोजन के बादः	9
क्या करें और क्या न करें	10
कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत	11
चुनौतियां और न्यूनीकरण	12
याद रखने हेतु प्रमुख बिंदु!	12
शोषितों का सशक्तिकरण	12
स्वतंत्र रूप से मतों की अभिव्यक्ति के लिए नाटक का माहौल सुरक्षित बनाए रखें	12
अनेक हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करें	13
तथ्य एंव आंकड़े तैयार रखें	13
अनुवर्तन (फॉलो–अप) रणनीति तैयार करें	13
साक्ष्य उत्पन्न करें	13
परिशिष्ट	13
चंदा पुकारे की पटकथा!!	13
नाटक चन्दा पुकारे	13
नाटक शुरू किया जाता है	14
नाटक इस दृश्य के साथ थम जाता है और जोकर यानि विदूषक लोगो से पूछता है	23

नुक्कड़ नाटकों के जरिये हितधारकों को संवेदी बनाना

एक अवलोकन

नुक्कड़ नाटक की मुख्य विशेषताएं

- चंदा पुकारे बाल विवाह, तथा लड़कियों के जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में शिक्षा और मनोरंजन के माध्यम से समुदायों तक पहुंचने, उन्हें शामिल करने व संवेदनशील बनाने के लिए एक सामुदायिक मोबिलाइजेशन टूल है।
- एक युवा किशोरी चंदा, चंदा पुकारे (चंदा पुकारे) नाटक की नायिका है।
- नुक्कड़ नाटक का आयोजन अन्य गतिविधियों, जैसे कि वीडियो वैन अभियानों या किशोर–किशोरी मेलों के साथ किया जा सकता है।
- यह नुक्कड़ नाटक, फोरम थिएटर की अवधारणा पर आधारित है जो स्पेक्टेटर/दर्शक (जो देखता है) को स्पेक्ट–एक्टर (जो देखता और कार्रवाई करता है) में रूपांतरित करने के लिए की जाने वाली प्रस्तुति है। मंचीय अभिनेताओं द्वारा एक लघु दृश्य, दमन के मसले को प्रस्तुत करता है और विश्व को यथावत एंटी–मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है। एक महत्त्वपूर्ण बिंदु पर, नाटक रूक जाता है और तब दर्शको को अभिनय के द्वारा दमन का सामना करने वाले को कार्रवाई के जरिये (नाटक में) परिणाम बदलने के लिए स्टेज पर आने के लिए प्रेरित करता है। उस क्षण में, संयोजन्कर्ता / अनुदेशक दर्शक बन जाता है। वह दर्शको को केंद्र में आने, दमित की भूमिका ग्रहण करने, तथा उसके विचार में सही प्रतिक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह शो मंचीय कलाकारों तथा दर्शकों को मनोरंजक ढंग से जोड़ता है और समुदाय को प्रभावित करने वाले एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक सरोकार पर सामूहिक प्रतिक्रिया के साथ सामुदायिक संवाद प्रेरित करता है।

संभावित आयोजन स्थल

किसी समुदाय विशेष को मोबिलाइज करने के लिए किसी निर्दिष्ट ग्राम पंचायत में स्कूलों, बाजारों तथा खुले समुदायों/गांवों में आयोजित किए जा सकते हैं।

दर्शकों का प्रकार

दर्शकों में आमतौर से–सामान्य समुदाय (महिलाएं और पुरूष, बुजुर्ग), एस एच जी, सी बी ओ, एन जी ओ, युवा और बच्चे, धार्मिक नेता तथा सेवाप्रदाता जैसे कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायक नर्स मिडवाइफें, प्रशिक्षित दाईयां, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारी, अध्यापक, पीआरआई के सदस्य, सरकारी कार्मिक, तथा महत्त्वपूर्ण जनमत वाहक (ओपिनियन लीडर) शामिल होते हैं।

कार्यक्रम की अवधि

नाटक 45–50 मिनट अवधि का रखा जाता है।

समुदाय से प्रतिक्रिया

- नुक्कड़ नाटक की तत्काल प्रतिक्रिया दर्शकों के बीच बाल विवाह के बारे में एक संवाद के रूप में होती है।
- वीडियो शो तथा नुक्कड़ नाटक, अच्छी प्रस्तुति के साथ एक प्रेरक माहौल बनाते हैं, जो दर्शकों को मसले पर विचार करने में मदद करते हैं।

- यह उनको व्यक्तिगत स्तर पर मसले को समझने, तथा उनके समुदाय में इसके दायरे तथा विविध आयामों का विश्लेषण करने की सुविधा देता है।
- इस सोच–विचार से एक चर्चा उत्पन्न होती है, जो मसले के समाधान में उनकी भूमिकाओं की खोजबीन, तथा बाद में उनके स्तर से संभावित समाधान खोजने पर आधारित होती है।
- लड़कियों पर बाल विवाह के नकारात्मक प्रभावों को महत्त्वपूर्ण हितधारकों और जनमत वाहकों द्वारा स्वीकार किया जाना, संदेश का कुल वजन (प्रभाव) बढ़ा देता है।

नुक्कड़ नाटक आयोजित करने की प्रक्रिया

कार्यक्रम आयोजन से पहले:

- नुक्कड़ नाटक की पटकथा तैयार करें। इस मामले में, चंदा पुकारे की पटकथा, 14 साल की एक उत्साही ग्रामीण लड़की के इर्द–गिर्द घूमती है जो अपने बड़े भाई की तरह स्कूल जाना चाहती है लेकिन मौजूदा शोषणकारी लैंगिक मानकों और कुरीतियों की वजह से वह विकास के इस अवसर से वंचित है। उसका पिता, जो एक बार उसे स्कूल जाने की अनुमति दे देता है, आखिरकार उसे रोक देता है और उसका विवाह करने का निर्णय कर लेता है। (नाटक की हिन्दी पटकथा के लिए परिशिष्ट का भाग देखें।)
- नुक्कड़ नाटक के पेशेवर कलाकारों की पहचान करें व उन्हें जोड़ें। इस नाटक की पटकथा में 3 पुरूष और 2 महिला पात्र हैं जो ऐसे कलाकारों द्वारा अभिनीत किए जाने चाहिए जिनको ग्रामीण व शहरी समुदायों में नुक्कड़ नाटक करने का गहन अनुभव हो। यह आवश्यक है कि कलाकारों में उत्साह हो, जोशीले हों, प्रेरित हों और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि वे बाल विवाह के मसले पर सीखने के इच्छुक हों और अभिनय व प्रस्तुति में नए तरीके समावेशित करना चाहते हों। अभिनय करने वाली टीम बनाते समय इन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है।
- नाटक में जोकर की भूमिका निभाने या अनुदेशक के रूप में सहयोग करने तथा प्रस्तुति के दौरान मसले के बारे में संवेदनशीलता व समझ बढ़ाने के लिए किसी एन जी ओ प्रतिनिधि को चुनें। यह मूल्य संवर्धन, प्रस्तुति के दौरान सुदृढ़ता और आत्मविश्वास बढ़ाएगा तथा टीम की क्षमता बढ़ाने के मामले में अच्छी रणनीति साबित होगा और अच्छी गुणवत्ता का आउटपुट सुनिश्चित करेगा।
- प्रदर्शन करने वाली टीम तथा जोकर का प्रशिक्षण चार क्षेत्रों पर आधारित होना चाहिए–शिल्प और तकनीक, मसले को प्रभावित करने वाली नीतियां और कानून, मनोविज्ञान तथा व्यवहार का ज्ञान, तथा प्रक्रिया निर्देशित करने वाले मूल्य और विश्वास। भाषा तथा गतिविधियों, चुटकुलों और टिप्पणियों, तथा दर्शकों से अमौखिक संवाद के संदर्भ में टीम के अभिनय के लिए आवश्यक संवेदनशीलताएं और नैतिक मान्यताएं सीखना अनिवार्य है। कलाकारों को मसले से घनिष्ठ रूप में जोड़ पाना तथा शोषित और शोषक दोनों के नजरिए से इसे समझ पाना और समुदाय के प्रश्नों व प्रतिक्रियाओं के जवाब राजनैतिक रूप से निष्पक्ष ढंग से दे पाना एक चुनौती होती है। दर्शकों से अप्रत्याशित प्रतिक्रियाएं संभालने के लिए कलाकारों को सहजबुद्धि और हाजिरजवाबी के कौशलों से लैस किया जाना चाहिए। एक मूल्य आधारित ढांचे में कार्य करने के लिए कलाकारों को प्रेरित करना, प्रशिक्षण का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है, जहां बाल विवाह,हिंसा, शोषण, दुर्व्यवहार, तथा अधिकारों के प्रति भेदभाव पूरी तरह से कठोर हैं।
- आकस्मिक चीजों के लिए एक निश्चित प्रतिशत भाग अलग रखते हुए कार्यक्रम का बजट बनाएं और इसका पालन करें।
- एन जी ओ / सी बी ओ साझेदारों तथा समुदायों व स्कूलों की पहचान करें जहां नाटक किया जाना है। इन स्थानों पर मुख्य प्राधिकारियों से मुलाकातें तय करें।
- एन जी ओ / सी बी ओ या स्कूल के मुख्य प्राधिकारियों से मिलें और मसले के बारे में, तथा कार्यक्रम के उद्देश्य और अपेक्षित प्रतिक्रिया के बारे में उन्हें विस्तार से जानकारी दें।

- ग्राम स्तर का कार्यक्रम होने पर, गांव के बुजुर्गों, पी.आर.आई सदस्यों, तथा जनमत वाहकों से शुरूआती बैठकें करते हुए उनको कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य और औचित्य के बारे में बताएं।
- संबंधित प्राधिकारियों से मिलकर कार्यक्रम की तारीखें, स्थान तथा अवधि पर चर्चा करें और तय करें।
- विशिष्ट स्थान तय करें जहां नाटक किया जाएगा।
- आगामी कार्यक्रम की तारीख, समय, तथा आयोजन स्थल के बारे में स्थानीय मीडिया को जानकारी दें।
- कार्यक्रम की योजना तथा आयोजनों के क्रम को अंतिम रूप दें तथा भूमिकाएं और जिम्मेदारियां निर्धारित करें।
- बाल विवाह पर मुख्य संदेश तैयार करें जो विशिष्ट दर्शकों को दिए जाने हैं। बाद में, अपने विषय विशेषज्ञों से आई.ई. सी तथा ब्रांडिग सामग्रियां जैसे कि बैनर, पुस्तिकाएं, पर्चे, विवरणिकाएं आदि स्थानीय भाषा में तैयार कराना शुरू कर सकते हैं जो कार्यक्रम के बाद वितरित की जा सकें।
- स्कूल या समुदाय से किशोर–किशोरी स्वयंसेवी चुनें जो कार्यक्रम के पहले, दौरान तथा बाद में सहायता कर सकते हों।
- स्वयंसेवियों के योगदान को सम्मानित करने के लिए छोटे–मोटे स्मृति चिन्हों के बारे में तय करें और उसका बजट रखें। इनमें प्रमाणपत्र, स्मृति चिन्ह वस्तुएं, ट्रॉफी आदि हो सकते हैं।
- ऐसे छोटे–मोटे सामानों का बजट रखें और खरीदें, जो बातचीत सत्रों के दौरान सामुदायिक सदस्यों या स्कूली बच्चों को उपहारों/इनामों के रूप में दिए जा सकें।
- बाल विवाह के मसले पर दर्शकों का ज्ञान और धारणाओं की जांच करने के लिए पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप तैयार करें। यह टूल, स्थानीय भाषा में साफ–साफ छपा होना चाहिए।
- समुदाय के लिए कार्यक्रम पूर्व घोषणा की योजना बनाकर इस पर अमल करें।
- कार्यक्रम को वीडियो, ऑडियो, या लिखित टिप्पणियों के रूप में रिकार्ड / दस्तावेजीकृत करने के लिए संसाधन नियुक्त करें और योजना बनाएं।
- आमंत्रण पत्र तैयार करें और सभी महत्त्वपूर्ण हितधारकों को स्वयं दे सकें तो ज्यादा ठीक है।
- समस्त आई.ई.सी. सामग्रियां, पर्याप्त मात्राओं में तैयार रखें।
- लक्षित क्षेत्र में बाल विवाह के प्रचलन से संबंधित तथ्य और आंकड़े तैयार करें।

कार्यक्रम आयोजन के दिन

- उद्घाटन तथा आयोजन स्थल पर समस्त व्यवस्थाओं की सावधानी से जांच करें– मार्ग, अवस्थिति, बैनर, ऑडियो–विजुअल सिस्टम आदि। आयोजन स्थल के लिए जल्दी निकलें और पहुंचें।
- नाटक शुरू होने से पहले, बाल विवाह पर आधारित विचारोत्तेजक फोटो और संदेशों वाले स्टैंडी लगाकर एक उत्साहजनक माहौल बनाएं।
- आयोजन से कुछ घंटे पहले घोषणाएं कराना सुनिश्चित करें, विशेषकर गांव में।
- प्रदर्शक दल से तालमेल बनाएं ताकि वे सही समय पर पहुंचे और कार्यक्रम प्रवाह बना रहे।
- प्रस्तुतियां देने वालों, संगठनकर्ताओं, प्रशिक्षकों, तथा स्वयंसेवियों की टीम को उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में संक्षेप में जानकारी दें।
- स्वयंसेवियों की मदद से गतिविधियों का प्रवाह और भीड़ को संभालें।

- खेल या आइसब्रेकर, पूरी प्रक्रिया का अच्छा शुरूआती बिन्दु होते हैं। जोकर ऐसा कोई खेल या गतिविधि शुरू कर सकता है जो अनिवार्य रूप से दर्शकों को सहज होने, ऊर्जा अनुभव करने, तथा नाटक में रूचि लेने में मदद करेगा। दर्शकों की रूचि जगाने और प्रेरित करने के लिए विविध खेल जैसे कि तालियां बजाना, विपरीत शब्द जोर से बोलना, खास लहजों में वाक्य दोहराना आदि किए जा सकते हैं। ये खेल, कलाकारों तथा दर्शकों के बीच घनिष्ठता बढ़ाने में बड़ा योगदान करते हैं।
- सुनिश्चित करें कि पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित, एकत्रित, तथा फिर जमा किए जाएं।
- शुरूआत में ही समुदाय को यह बता देना जरूरी है कि जो नाटक उन्होंने पहले देखे हो सकते हैं, उनसे यह नाटक एकदम अलग तरह का होगा। दर्शकों से यह अपेक्षा शुरूआत में ही स्पष्ट करनी जरूरी है कि नाटक अपने चरम पर पहुंचने पर उनको इससे जुड़ना होगा। ऐसी बातें, जैसे कि इस नाटक का अंत आपको तय करना होगा, क्योंकि हमें नहीं पता कि वह क्या है.....इसलिए आप में से कौन–कौन इसे अंजाम तक पहुंचाने के लिए तैयार है! उपयोग की जा सकती हैं। जहां एक स्तर पर यह दर्शकों की जिज्ञासा और रूचि बढ़ाता है, वहीं अन्य स्तर पर यह प्रक्रिया में उनकी भागीदारी की अपेक्षा से भी उन्हें परिचित करा देता है।
- वास्तविक प्रस्तुति–पृष्ठभूमि बन जाने के बाद, प्रस्तुति शुरू की जा सकती है। अभिनय के दौरान, शो को जीवंत तथा रोचक बनाए रखने के लिए दर्शकों से निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए। क्लाइमेक्स तक पहुंचने के बाद (जब नायिका चंदा अपने विवाह के विरोध में अपने पिता को मनाने का प्रयास करती है) नाटक रूक जाता है। अब, फोरम शुरू हो जाता है और दर्शकों से प्रतिक्रिया देने के लिए कहा जाता है जब चंदा अपने भावी दूल्हे और उसके परिवार से मिलने से मना कर देती है। यदि दर्शक अपनी इच्छा से आगे न आएं, तो जोकर द्वारा उनको आगे आने और संकेत के तौर पर लाल दुपट्टे का उपयोग करके चंदा की भूमिका करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। पिता और चंदा स्पेक्ट–एक्टर के बीच बातचीत तब तक चलेगी जब तक कहानी का संतोषजनक समापन नहीं हो जाता।
- अंत में, संयोजनकर्ता (फैसिलिटेटर) या जोकर, नाटक का समापन करते हुए संक्षेप में मुख्य संदेश देता है। वह दर्शकों को भी समय देने तथा धैर्य बनाए रखने के लिए धन्यवाद देता है। इसके बाद बाल विवाह पर आधारित साहित्य वितरित किया जाता है और दर्शकों द्वारा भरे गए परीक्षण पश्चात फार्म एकत्रित किए जाते हैं।
- समुदाय/स्कूल से अन्य वक्ताओं को दर्शकों को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित करें।
- तब, दर्शकों को निर्देशित विशिष्ट प्रश्न पूछते हुए चर्चा का संचालन करें।
  - अभी उन्होंने क्या देखा
  - वे इस बारे में क्या सोचते हैं
  - क्या ऐसा कुछ उनके समुदाय में होता है
  - किस सीमा या स्तर तक
  - समस्या के लिए कौन जिम्मेदार है
  - समस्या हल करने के लिए क्या किया जा सकता है
  - हमारी भूमिका क्या है।
- सुनिश्चित करें कि स्वयंसेवियों द्वारा आईईसी सामग्रियां समस्त दर्शकों के बीच वितरित की जाएं।
- सुनिश्चित करें कि पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित, एकत्रित, तथा कार्यक्रम के पश्चात जमा किए जाएं।
- कुछ पेन तैयार रखें, क्योंकि लोगों को फीडबैक फार्म भरने के लिए जरूरत पड़ सकती है।
- पूर्व तथा पश्चात परीक्षणों में निम्न लिखित वस्तुनिष्ठ वाले प्रश्न हो सकते हैं।
  - क्या लड़की के जन्म पर भी लड़के की तरह खुशियां मनाई जानी चाहिए?
  - क्या लड़कियों और लड़कों को एक जैसी शिक्षा दिलानी चाहिए?

- क्या लड़कियों और लड़कों के लिए कैरियर के एक जैसे अवसर होने चाहिए?
- क्या लड़कियों का विवाह 18 वर्ष आयु से पहले कर देने से उनके स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ता है?
- क्या आपके विचार में कोई लड़की/लड़का 18/21 वर्ष आयु से पहले विवाह के बाद की जिम्मेदारियां उठाने के लिए (भावनात्मक और शारीरिक रूप से) तैयार होता है?
- क्या लड़की के लिए यह उचित है कि वह अपनी 18 वर्ष आयु से पूर्व अभिभावकों द्वारा तय किया जा रहा विवाह करने से मना कर दे?
- क्या लड़कियां और लड़के अपनी इच्छानुसार कब विवाह करना है ये तय कर सकते हैं?
- सरकार ने लड़कियों की शिक्षा और विवाह के लिए विविध सेवाएं प्रदान की हुई हैं?
- क्या आपके विचार में इस तरह के कार्यक्रम, शीघ्र विवाह के दुष्परिणामों के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाएंगे?
- यदि आपको अपने समुदाय में किसी बाल विवाह का पता चले, तो क्या आप उसके खिलाफ कार्रवाई करेंगे?
- क्या आप बाल विवाह के विरूद्ध कार्रवाई के लिए अपने समुदाय में दूसरे लोगों को प्रेरित करेंगे?

- इसके अलावा, नई या असाधारण घटनाएं या प्रतिक्रियाएं, टीम द्वारा अलग से लिखी जा सकती हैं। सफल केस अध्ययन भी विकसित और रिपोर्ट किए जा सकते हैं।
- कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया/साउंड बाइट/वीडियो शॉट लें और इसे लिखित में या ऑडियो/वीडियो के जरिए दस्तावेजीकृत करें।
- फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी तथा/या लिखित रिपोर्ट के रूप में कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण सुनिश्चित करें।
- स्कूली बच्चों या समुदाय के साथ बातचीत के सत्र के दौरान, खासतौर से प्रश्न और उत्तर वाले चक्र के समय, छोटे–मोटे उपहारों/इनामों के माध्यम से सकारात्मक और उत्साहजनक प्रतिक्रियाओं को सम्मानित करें।
- बाल विवाह पर आधारित लघुकथाओं तथा संदेशों वाले चमकदार और रंगीन चित्रात्मक कार्ड, स्थानीय भाषा में आई.ई.सी सामग्रियों के रूप में विकसित तथा दर्शकों के बीच वितरित किए जा सकते हैं। इसी प्रकार, बाल विवाह के बारे में जानकारी तथा बाल विवाह की घटना होने पर मदद कहां से तथा कैसे ली जा सकती है, आदि जानकारी देने वाली चित्र–पुस्तिकाएं तैयार की जानी चाहिए। नाटक के संदेश सुदृढ़ बनाने तथा समुदाय को बेहतर याद रखने में मदद के लिए ऐसे संवाद संसाधन बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।
- समय देने, तथा सक्रिय भागीदारी के लिए समुदाय/स्कूली बच्चों को बाद में धन्यवाद दें।

कार्यक्रम आयोजन के बाद:

- विविध ऑफलाइन प्लेटफार्मों तथा दानदाताओं (डोनर्स) के सम्मुख कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।
- सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें, अगर कोई हो ।
- प्रभावकर्ताओं तथा साझेदारों के सहयोग और सहभागिता के लिए उनको धन्यवाद पत्र भेजें।
- स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें।
- प्रेस कवरेज दस्तावेज तथा समतुल्य उद्धृत विज्ञापन मूल्य फाइल करें।
- निगरानी तथा मूल्यांकन टीम/विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें।
- इन प्रारूपों से निष्कर्षों का विश्लेषण प्राप्त करें।
- उपलब्धियों, चुनौतियों, तथा कमियों के संदर्भ में पूरे कार्यक्रम आयोजन की समीक्षा करें। ये बातें लिखें और भावी संदर्भ के लिए टिप्पणियां बनाकर रखें।

- लिखित रिपोर्टें/मुख्य बातें, फोटोग्राफ तथा वीडियो आदि संबंधित आंतरिक प्राधिकारियों और बाहरी एजेंसियों तथा हितधारकों व दानदाताओं को भेजें।

कार्यक्रम आयोजन से पहले:	कार्यक्रम आयोजन के दिन:	कार्यक्रम आयोजन के बाद:
▪ नुक्कड़ नाटक सहित पूरे कार्यक्रम की योजना बनाएं। ▪ नाटक की पटकथा तैयार करें। ▪ प्रस्तुति दल तथा विदूषक नियुक्त और प्रशिक्षित करें। ▪ बजट बनाएं। ▪ एनजीओ/स्कूल/एसएचजी से साझेदारी को अंतिम रूप दें। ▪ समुदाय के प्रतिनिधियों से मिलें। ▪ सही स्थान व समय तय करें। ▪ मुख्य संदेशों को अंतिम रूप दें। ▪ आईईसी सामग्रियां तैयार करें। ▪ निमंत्रण भेजें। ▪ स्वयंसेवकों को चिन्हित करें। ▪ दस्तावेजीकरण तथा एमएंडई के लिए व्यवस्था स्थापित करें।	▪ आयोजन स्थल तथा व्यवस्थाओं की जांच करें। ▪ घोषणाएं करें। ▪ आइस ब्रेकिंग खेल आयोजित करें। ▪ पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित करें तथा निर्देश दें। ▪ नुक्कड़ नाटक करें। ▪ अन्य वक्ताओं को आमंत्रित करें। ▪ चर्चाएं कराएं। ▪ आईईसी सामग्रियां वितरित करें। ▪ कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण करें।	▪ कार्यक्रम की ऑनलाइन एवं दानदाताओं को रिपोर्ट करें । ▪ सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें। ▪ स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें। ▪ धन्यवाद के पत्र भेजें। ▪ मीडिया कवरेज अनुवर्तन करें। ▪ एम.एंड. ई विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें। ▪ टीम के साथ कार्यक्रम की समीक्षा करें। ▪ सबक लिखें।

क्या करें और क्या न करें

- कार्यक्रम के दौरान कोई विलम्ब या विफलताओं से बचाव के लिए सभी जरूरी अनुमतियां पहले से ही ले लें।
- नाटक आयोजित करने के लिए चुना गया स्थान, जाति धर्म आदि के आधार पर किसी भेदभाव से रहित एकदम तटस्थ स्थान होना चाहिए। प्रायः गांव में कुछ जगहें ऐसी होती हैं जहां सभी जातियों के लोगों का जाना मना रहता है, और यह सामुदायिक सदस्यों की समग्र प्रतिभागिता को बाधित कर सकता है।
- गांव तथा स्कूल में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए समय का चुनाव, समुदाय या स्कूल के प्राधिकारियों से परामर्श करके इस तरह तय करना चाहिए कि जब ज्यादा से ज्यादा दर्शकों को मोबिलाइज किया जा सके। फसल कटाई के समय, त्यौहार या स्कूल में परीक्षाओं के समय आदि के दौरान ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने से बचना चाहिए जब अधिकतर सामुदाय के सदस्य व्यस्त होते हैं।
- कार्यक्रम में आमंत्रित जनमत प्रेरकों के भाषणों में लैंगिक भेदभाव अथवा बाल विवाह को समर्थन करने वाली बातों और नजरियों की झलक नहीं मिलनी चाहिए। यदि संभव हो, तो उन्हें कार्यक्रम में उनकी प्रतिभागिता को लेकर पहले ही संक्षिप्त जानकारी दे दी जानी चाहिए।
- यदि कार्यक्रम को कवर करने के लिए मीडिया को बुलाया गया है, तो संगठन के प्रवक्ता के रूप में केवल एक व्यक्ति को नियुक्त करना अनिवार्य हो जाता है। कार्यक्रम के लिए पहले से प्रेस विज्ञप्ति (पर्यवेक्षकों द्वारा पहले ही परीक्षण की जा चुकी) तैयार रखना भी उचित रहता है।

- समुदाय में स्थानीय भाषा में उपयुक्त आई.ई.सी सामग्रियां वितरित किए बिना कार्यक्रम समाप्त नहीं करना चाहिए। जरूरी हो तो ऐसे संगठनों तथा व्यक्तियों के नाम व हेल्पलाइन नम्बर आदि की जानकारी भी दी जानी चाहिए जिनसे बाद में संपर्क किया जा सके।

- नियुक्त अनुदेशक (फैसिलिटेटर) या जोकर को मसले की पूरी जानकारी होनी चाहिए तथा समुदाय के स्वरूप के बारे में पूरी तरह पता होना चाहिए। इससे समुदाय से सार्थक व्यवहार करने तथा बाल विवाह के मसले पर सही संदेश देने में मदद मिलती है।

- कुछ नई चीजें, जो दिखने में हालांकि छोटी–मोटी हो सकती हैं, वे प्रमुख हितधारकों से सुदृढ़ रिश्ता कायम करने तथा मसले पर उनका सक्रिय सहयोग हासिल करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। इनमें से कुछ निम्न हैं:

  - कार्यक्रम की योजना में सामुदायिक प्रतिनिधियों को केंद्रीय भूमिका सौंपना।
  - नाटक शुरू कराने के लिए किसी सरकारी अधिकारी/पुलिस प्रतिनिधि को आमंत्रित करना।
  - प्रश्न–उत्तर सत्र में सकारात्मक तथा उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं देने वाले सामुदायिक सदस्यों को इनाम वितरित करने के लिए पीआरआई सदस्य/पुलिस/सरकारी अधिकारियों से कहना।

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत

सामुदायिक मोबिलाइजेशन की रणनीति के रूप में नुक्कड़ नाटक अभियान की सफलता, समुदाय को प्रभावक रूप से संवेदनशील बनाने की इसकी क्षमता में निहित है ।

फोरम थिएटर से संबंधित कुछ विशेष सफलताएं नीचे दी गई हैं।

- सामुदायिक स्तर पर मजबूत साझेदारियों और गठबंधनों का निर्माणः हस्तक्षेप वाले इलाके में व्यापक स्तर पर समुदाय (महिलाएं, पुरूष और बुजुर्ग), विविध सेवा प्रदाताओं, धार्मिक नेताओं, पीआरआई सदस्यों, सरकारी कार्मिकों, मीडिया (इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट), तथा स्कूल प्राधिकारियों को ऐसे आयोजनों के माध्यम से मसले के बारे में बेहतर अवगत कराया जा सकता है। अधिक महत्त्वपूर्ण रूप में, मसले, तथा इसकी रोकथाम में अपनी भूमिका को समझने के बाद उनमें से कई लोग अपना सहयोग मजबूत बनाने तथा अभियान में अधिक सक्रिय रूप से भागीदारी के लिए उत्सुक हो सकते हैं। फोरम थिएटर को ऐसे समुदायों को संवेदनशील व सशक्त बनाने के लिए भी एक मूल्यवान तरीका माना जाता है जिनकी अपनी आवाज नगण्य या एकदम नहीं होती। ऐसे उदाहरण हैं जहां कुछ सरकारी अधिकारियों ने परियोजना स्टॉफ से विशिष्ट क्षेत्रों (प्रखंड या जिला) में प्रस्तुति देने के लिए कहा, जहां समाज के अपेक्षाकृत कमजोर वर्गों की तादाद अधिक थी।

- बाल विवाह के चलन के बारे में शुरू होने वाले संवाद के रूप में प्रायः तत्काल असर दिखाई देता है। जनता, सामान्य रूप से, बाल विवाह को एक सामाजिक बुराई के रूप में स्वीकार करने लगती है और समस्या हल करने के लिए संभावित समाधानों की धीरे–धीरे खोज करने लगती है। बाल विवाह के नकारात्मक प्रभावों के बारे में समुदाय को संवेदनशील बनाने की जिम्मेदारी युवा लड़कियों को सौंपा जाना, तथा सामुदायिक प्रभावकर्ताओं–पी.आर.आई सदस्यों, शिक्षाविदों, तथा धार्मिक नेताओं की सक्रिय सहभागिता द्वारा प्रचलित कानूनों का बेहतर क्रियान्वयन, समाधानों में शामिल हैं।

- ये आयोजन, विभिन्न स्तरों पर समुदाय से बेहतर रिश्ते बनाने में मदद कर सकते हैं। कार्यक्रम के पहले, दौरान तथा बाद में तालमेल गतिविधियां, नेटवर्किंग बनाने और समुदाय में जमीनी स्तर की मौजूदगी बढ़ाने में मदद करती हैं।

- पीआरआई तथा सेवाप्रदाता धीरे–धीरे बाल विवाह के मसले पर रूचि लेने लगते हैं, उदाहरण के लिए रांची में एक सरपंच जिसने पहले अपने गांव में बाल विवाह के मामलों का होना अस्वीकार किया था, उसने वीडियो वैन कार्यक्रम देखने के बाद अपने यहां बाल विवाह के 10 मामलों की पहचान की तथा स्थानीय पुलिस की मदद से अपने क्षेत्र में इस कुप्रथा को चुनौती देने का बीड़ा उठाया।

चुनौतियां और न्यूनीकरण

- कलाकारों को फोरम थिएटर के मायने समझाए जाने से पहले नियमित और मौसमी रंगमंच कलाकारों की वे जरूरतें समझी जानी चाहिए जिन्हें पूरा किया जाना आवश्यक होता है। ये जरूरतें, प्रस्तुति संबंधी गहन प्रशिक्षण तथा अभ्यास सत्रों पर केंद्रित प्रयासों की मांग करती हैं।
- फोरम थिएटर टीम को संगठित करना और बनाए रखना भी एक चुनौती बन सकती है जिसके लिए आयोजक एनजीओ द्वारा सूक्ष्म निगरानी तथा समस्या समाधान किए जाने की आवश्यकता होती है।
- टीम को दर्शकों से प्रतिक्रियाएं निकलवाने की कला का पूरी तरह अभ्यास करने की जरूरत होती है तथा इसके लिए तालमेल केन्द्रित टीम का होना आवश्यक होता है।
- समाज के अल्पसंख्यक समुदायों तथा सुदूर जनजातीय समुदायों तक पहुंचना कई बार कठिन साबित हो सकता है, जिसके समाधान के लिए सामुदायिक नेताओं से रिश्ते मजबूत बनाए जाने चाहिए और कार्यक्रम के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए दर्शकों को पूर्व जानकारी दी जानी चाहिए।
- कुछ निश्चित क्षेत्रों में, कलाकारों की सुरक्षा और संरक्षा के मसले का सावधानी से समाधान करना आवश्यक होता है। कार्यक्रम से पहले दर्शकों के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लेना बेहतर रहता है। सावधानीपूर्वक योजना बनाना तथा व्यवस्था करना बहुत अनिवार्य है और यदि आवश्यकता हो तो पुलिस सुरक्षा लेना भी अच्छी न्यूनीकरण रणनीति हो सकती है।
- कार्यक्रमों के दौरान सामुदायिक सदस्यों की कम उपस्थिति तथा सीमित प्रतिभागिता से बचाव के लिए, यह महत्त्वपूर्ण है कि तारीख और समय का चुनाव सामुदायिक प्रतिनिधियों के परामर्श से किया जाए और आगामी आयोजन के बारे में घोषणाओं तथा मौखिक प्रचार–प्रसार के माध्यम से सूचनाओं को अच्छी तरह प्रसारित किया जाए।
- चर्चाओं के दौरान, सामुदायिक सदस्य अनुदेशक के समक्ष कठिन प्रश्न रख सकते हैं और चर्चाओं को दूसरे मसलों जैसे कि गरीबी, शिक्षा आदि की तरफ भटकने से बचाते हुए बाल विवाह के मसले पर केंद्रित रहने के लिए प्रयास करने की जरूरत होती ऐसे में प्रभावी रणनीति यही हो सकती है कि उनकी बात धैर्यपूर्वक सुनें लेकिन चर्चाओं को वापस बाल विवाह की तरफ ही मोड़ दें। कुछ प्रश्नों पर जवाब के लिए सामुदायिक नेताओं से मदद लेना भी सहायक हो सकता है।

याद रखने हेतु प्रमुख बिंदु!

शोषितों का सशक्तिकरण

शोषितों का सशक्तिकरण तथा समाधान हेतु उनकी क्षमताओं पर भरोसा, फोरम थिएटर की विचारधारा तथा प्रारूप का अभिन्न तत्व है। यह टूल दर्शाता है कि लोग कितनी अच्छी तरह से मसले से जुड़ते हैं, इसे आत्मसात करते हैं, और समाधानों को स्थानीय आवाज देते हैं। समग्र लक्ष्य महिलाओं या बालिकाओं का पूर्ण सशक्तिकरण करना होता है, जिनको इतना साहसी बनाना होता है कि वे भीड़ के सामने खड़ी हो सकें और अपने शोषक (इस मामले में पिता) को चुनौती दे सकें। ज्यादातर लोगों के लिए, कदाचित यह पहली बार ऐसा होता है जब कि वे शोषण के किसी मामले को चुनौती देने के लिए उठ खड़े होते हैं।

स्वतंत्र रूप से मतों की अभिव्यक्ति के लिए नाटक का माहौल सुरक्षित बनाए रखें

लोग अपनी बात कहना और रखना चाहते हैं लेकिन उनको ऐसा करने के लिए पर्याप्त तटस्थ तथा सुरक्षित माहौल और मौके नहीं मिलते। फोरम थिएटर के जरिए, उनको यह अद्वितीय अवसर मिलता है। जिस आंतरिक भावना के साथ महिलाएं, युवा लड़कियां, तथा यहां तक कि लड़के भी अपनी राय रखने के लिए खड़े होते हैं ये इस बात का प्रबल संकेत है कि फोरम थिएटर के सामान और भी अवसरों को बनाने कि जरुरत है, जहां वे खुद को प्रभावित करने वाली समस्याओं के आनुभविक समाधान पेश कर सकें।

अनेक हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करें

सरकारी कर्मिकों (अधिकारियों) जैसे कि प्रखंड विकास अधिकारी, तथा प्रखंड शिक्षा अधिकारी, पी.आर.आई सदस्यों, आई.सी.डी.एस सुपरवाइजरों, स्थानीय एन.जी.ओ, मीडिया, धार्मिक और राजनैतिक नेताओं, स्कूल प्राधिकारियों, एस.एच.जी, युवा समूहों व व्यापक समुदाय से भागीदारी कराने के प्रयास करना, कार्यक्रम की सफलता के लिहाज् से महत्त्वपूर्ण हैं। इन हितधारकों को बाल विवाह के मसले पर बातचीत में शामिल करने से अच्छे स्तर का संवेदीकरण हो सकता है और विशेषकर सामुदायिक स्तर पर बाल विवाह के मसले को चुनौती देते समय उनका समर्थन मिल सकता है।

तथ्य एंव आंकड़े तैयार रखें

उन चुनौतियों या प्रश्नों का पहले से अनुमान लगाना उचित रहता है जो समुदाय या दर्शक, बातचीत के सत्र के दौरान अनुदेशक (फैसिलिटेटर) के सामने खड़े कर सकते हैं। लिहाजा, ऐसे उपयुक्त उत्तरों के साथ तैयारी कर लेने की सलाह दी जाती है जिनमें बाल विवाह के मसले तथा उस विशिष्ट क्षेत्र में इसके प्रचलन के बारे में निश्चित तथ्य और आंकड़े मौजूद हों। स्थानीय सरकारी कार्मिकों या पीआरआई सदस्यों से निश्चित इनपुट लिए जा सकते हैं।

अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति तैयार करें

स्थानीय एन.जी.ओ साझेदारों या स्कूलों के साथ मिलकर बनाई गई अनुवर्तन (फॉलो–अप) रणनीति यह सुनिश्चित कर सकती है कि औपचारिक या व्यवस्थित अंतर्क्रियाओं जैसे कि प्रशिक्षणों, या बस अनौपचारिक बैठकों, या दोनों के मिले–जुले रूपों के जरिए, मसले के बारे में समुदाय रचनात्मक रूप से जुड़ा रहे। जहां संभव हो, मल्टीमीडिया, ऑनलाइन तथा जनसंचार माध्यम (मास मीडिया) प्लेटफार्मों के माध्यम से अनुवर्तन (फॉलो–अप) गतिविधियों को एकीकृत करना लाभप्रद हो सकता है।

साक्ष्य उत्पन्न करें

नुक्कड़ नाटक, उपयोगी साक्ष्य उत्पन्न करने वाले शिक्षण अवसरों के रूप में ही देखे जाने चाहिए। अतः सरल प्रणालियां जैसे कि छोटे और सरल प्रारूपों (फार्मों) के जरिए पूर्व और पश्चात परीक्षण आयोजित करना, ऑडियो–वीडियो या वर्णनात्मक रिपोर्टों के माध्यम से आयोजन का दस्तावेजीकरण करना, साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए उपयोगी हो सकता है। हालांकि डेटा के विश्लेषण से निकलने वाले निष्कर्षों को सामुदायिक पहुंच तथा मोबिलाइजेशन की समग्र प्रक्रिया को मजबूत बनाने के लिए आंतरिक और वाह्य रूप से रिपोर्ट अवश्य किया जाना चाहिए।

परिशिष्ट

चंदा पुकारे की पटकथा!!

जोकर विदूषक (1) पहले दर्शको के साथ जोकर (विदूषक) खेल खिलाता है
(2) फिर नाटक के बारे मे बताता है (सिर्फ नाम)
(3) और कहता है, इस नाटक का कोई अन्त नहीं है इसका अंत आप लोगों को बनाना है। (दर्शको से)

नाटक

चन्दा पुकारे

मुख्य पात्रः- (1) सुखियाः– चन्दा का पिता (एक अहमी आदमी)
(2) दुखियाः– सुखिया कि पत्नी (एक लाचार माँ)
(3) लखपतियांः–सुखिया का बेटा (एक बिगडा हुआ लड़का)
(4) मास्टरः– स्कूल का मास्टर

अन्य पात्रः- सोनुः– एक पढ़ने लिखने वाला लड़का जो चन्दा का दोस्त है और उसी कि कक्षा में पढता हैं (यह पात्र मास्टर का किरदार करने वाले को करना है)
लखपतियां :– (चाचा, चाची और सूमो के साथ स्कूल का विद्यार्थी का भी पात्र करें)
मास्टर :– (सुखिया का भाई) (चाचा और दूसरा विद्यार्थी की भूमिका भी निभानी है)
दुखिया– (तीसरा विद्यार्थी भी बना है)

नाटक शुरू किया जाता है

दृश्य १ प्रथम दृश्य में चन्दा बीच में और सभी पात्र उसे घेर कर खडे है और इधर उधर भागते हुए चन्दा–2 पुकार रहे है और बाद में हमिंग (हम.....) करते हुए एक व्यक्ति बोल रहा है

संवादः घनी कोहरे कि राह ..... चन्दस पे लगा ग्रहण पते खामोश ..... सारा गांव खामोश ..... एक नन्ही सी चिडियां ..... अपने दिल को अपने पंजों में समेटे हुए है और उसी का नाम है चन्दा–3 या चांद बना हुआ) फिर यह सीन (बीट के साथ)

समाप्त

दृश्य २ सुखिया (हाथ में थाली बजाते हुए खुशी से बेहद खुशी के मुद्रा में) अरे ओ बुधना, अरे मगरा हम बाप बन गऐ है बाप। अरे कमली चाची, अरे बीमला चाची हम बाप बन गए है बाप।

चन्दा पुकारे

विदूषक (जोकर) तो अब आपके सामने नाटक प्रस्तुत करने जा रहे है चन्दा पुकारे ..... इस नाटक का अंत नहीं। इस नाटक का अंत आपको बताना है।

संगीत

संवाद : घने कोहरे की रात ..... चाँद पे लगा ग्रहण पत्ते खामोश ..... पूरा गाँव खामोश ..... एक चिड़िया अपने दिल को अपने पंजों से समेट कर रखे हुए ..... और उसी गाँव के घर में रहती हुई एक 14 साल की मासूम लड़की ..... चन्दा ..... चन्दा ..... चन्दा .....

संगीतः-
थाली बजने की आवाज

सुखीयाः– अरे सोमरा, मंगरा, बुधना हम बाप बन गए है
(खुशी का अहसास)
अरे लक्ष्मी काकी ..... हम बाप बन गए रे

C 1 अरे वाह ..... पर ये तो बता बचवा का नाम का रखे हो?

सुखीयाः– अरे तुमको नहीं पता ..... मेरा नाम सुखीया, हमरी जोरू का नाम दुखिया तो हमार ..... बचवा का नाम रहेगा लखपतिया.....

C 1 अरे वाह ..... वाह का नाम है .....

सुखीया :– अरे बुलाव ..... लाईट वाला ..... खाना वाला ..... गाँव वाला सबकों बुलाव ..... सबको न्योता देंगे खूब खर्च करेंगे .....

C 1 (गाँव वालों को खबर कह रहा है) पहले चाचा कमली चाची और सूमो को)

C 1 अरे चाचा ..... एगो बात बताऐं ?

चाचा : का रे ?

C 1 अरे हमरा भाई सुखीया को बोला (बेटा) हुआ है

चाचा– प्यार से मारते हुए ..... अरे ये तो बहुत खुशी की बात है (और मार खाते फिर जाता है)

C 1 अरे ओ चाची ..... एगो खुशी की बात है .....

चाची– का हैं ?

C 1 हमरे भाई को लड़का हुआ है .....

चाची– अरे वाह! ये तो बहुत खुशी की बात है

C 1 कल आ जाना ..... छट्ठी है ..... बच्चो को ले चल आना

चाची– ठीक है बिटवा आ जाएँगे ..... (हालो से) (गुद गुदाते हुए)

C 1 अरे इ सूमो कहा गया

सूमो – (गाना गाते हुए प्रवेश करता है)
लकली कि काठी, काठी पे घोड़ा घोडे के दुम पे जो मारा (थोडा बोलते हुए लात मारता है और)

C 1 अबे चुप (उसे डॉटते हुए) और एक बात सुन हमारे यहाँ लड़का हुआ है

दर्शको से

C 1 और दो साल के बाद सुखीया के घर फिर एक नन्ही सी जान ..... एक मासुम ने जन्म लिया ..... इस बार लड़का नहीं लड़की पैदा हुई है ..... जब लड़की पैदा हुई तो सन्नाटा मातम छाया है ..... क्या लड़की पाप है? (कलपते हुए)

गानाः– जे ही कोख बेटा जनमे .....? वही कोख बेटीया .....

दृश्य (सुखीया का बेटा स्कूल जाने वाला है)

सुखीयाः– अरे ओ ? दुखिया ? कहाँ मर गई ??
दुखिया?

सुखियाः– अरे का है जी ? काहे चिल्ला रहे हैं?

सुखियाः– अरे कहाँ थी ?

दुखियाः– यही तो थी ?

सुखियाः– चल एक गिलास पानी ला ? अरे सुन ये देख लखपतिया के लिए एक टीप–टॉप स्कूल बैग लाया हूँ ये .....
थरमस और खाने का ..... बचवा स्कूल जाएगा .....

C 1 सुखिया का भाई

दुखियाः– अरे वाह ..... ये तो सुन्दर हे ? ऐ जी .....
उे जी! बहुत मंहगा होगा ??

सुखीयाः– अरे चुप !!! मंहगा तुम्हारे दिमाग है ..... अब बचवा का नाम है लखपतिया ..... पढ़ लिख कर बनेगा करोड़पति .....फिर अरबपतियां ..... लोग कहेंगे वो देखों लखपतिया का बाप सुखपतिया जा रहा है ..... लखपतिया को बुलावा .....लखपतिया (आवाज लगाता है) ???

ऐ लखपतिया

लखपतियाः– खेलते हुए आता है ..... बाबा .....बाबा सुखपतिया से लिपट जाता है ..... (सुखिया उसकी पीठ ठोकता है) ओ वाह कितना सुन्दर लग रहा है..... अरे जूते के फिते नहीं बाँधें .....चल

दुखियाः– अरे बेटा टिफीन तो ले लो ..... तेरे पसन्द की चीज बनाई हैं।

सूत्रधारः– और लखपतिया के स्कूल जाते हुए पूरे पाँच साल बीत गए है

चंदा बेटीः– भईया को स्कूल से लौटते हुए बोलती है भैया – भैया ये आप बस्ता लेकर कहाँ जाते हो .....?

लखपतियाः– अरे मैं ..... मैं न रोज स्कूल जाता हूँ ..... स्कूल .....स्कूल ??? ल। वहाँ पढ़ाई होती है।

चन्दाः– पढ़ाई ..... पढ़ाई ..... वो क्या होती है ?

लखपतियाः– पढ़ाई होती है ..... दो एकम दो ..... दो दुनी चार और एक फॉर एपल..... दोपहरी का खाना और खेलना कबड्डी–कबड्डी .....

चन्दाः– अरे वाह .....!!! (आश्चर्य से) पर भैया मुझे भी स्कूल जाना हैं

लखपतियाः– अरे तू थोड़े स्कूल जाएगी.....

चन्दाः– क्यों ?

लखपतियाः– हूँ ! तू लड़की है लड़की .....

चन्दाः– (रोते हुए)– माँ ! माँ!! माँ !!!

दुखीयाः– क्या हुआ ?

चन्दाः– मुझे भी स्कूल जाना है..... भैया रोज जाते है .....

दुखीयाः– अच्छा ! शाम में जब बाबा खेत से वापस आएँगें तो मैं बात करूँगी ..... तू भी स्कूल जाएगी .....

चन्दाः– हाँ, बिल्कुल सच्ची।

चन्दाः– वाह ! मैं भी पढ़ने जाउँगी ..... मैं भी ..... मैं भी..... भैया की तरह स्कूल जाउँगी। मैं भी .....

सुखीयाः– (खेत से लौटता है ..... दुखिया उसे पानी देते हुए)

दुखियाः– ऐ, जी एक बात बोले ?

सुखीयाः– वो बात ऐसी है .....कि चन्दा भी अब बड़ी हो गई है ..... उसका भी दाखिल करवा देंगें ???

सुखीयाः– क्या ?

दुखियाः– हाँ वो आज बहुत रो रही थी ..... कह रही थी कि वो भी स्कूल जाएगी।

सुखीयाः– क्या ? पगला गई है ? लड़की जात स्कूल जाएगी? पढ़ लिख कर क्या करेगी? उसे घर के काम काज सीखा .... अब वो (8–9) साल की हो गई है तो अभी से उसके लिए लड़का खोजना पड़ेगा, तब जाकर ..... चार पाँच साल बाद उसके लिए लड़का मिल सकेगा ये तो हमारी खानदानी रिति रिवाज है।

दुखियाः– क्यों ?? इतनी कम उम्र में शादी करोगें ?

सुखियाः– अरे ..... जब हमारी शादी हुई थी तो तुम्हारी क्या उम्र थी ?

दुखियाः– मुझे क्या पता ?

सुखीयाः– मैं 18 साल का था और तू होगी 15 साल की ..... अभी तो समाज में उठना बैठना है ..... कही उँच नीच हो गई तो मेरी नाक कट जाएगी।

सुखीयाः– तू चुप कर! मेरे काम में दखल मत दे ..... चल खाना लगा

चन्दाः– बाबा.....बाबा ..... मुझको भी स्कूल भैया की तरह स्कूल जाना है ..... मुझे न एक बैग ..... पानी की बोतल और टिफीन चाहिए.....

सुखीयाः– चन्दा ..... पढ़ने का काम लड़को का है ..... तू घर के काम कर ..... मैं तुम्हारे लिए नई फ्रॉक, जूती और टौफी ला दूँगा।

चन्दाः– नहीं बाबा ..... मैं भी स्कूल जाऊँगी .....

सुखीयाः– अरे चन्दा एक गुडिया भी ला दूँगा।

चन्दाः– नहीं मैं स्कूल भी जाउँगी .....
गीत– हे उपर वाला तो ये का कर देले।

मास्टर जीः– सब बच्चे बैंठ जाओं।
अरे बेटा धनश्याम स्कूल काहे नहीं आया कहाँ गया था।

धनश्यामः– मैं जंगल गया था

मास्टर जीः– अरे सुखारी तुम कहाँ था।

सुखारी जीः– बिल्ली पकड़ने गये थे।

मास्टर जीः– झगड़ा क्यों कर रहे थे? किताब खोलों? लखपतिया गृह कार्य कर के आया है

लखपतियाः– भूल गया।

मास्टर जीः– 2 और 2 कितना होता है ?

लखपतियाः– पाँच

मास्टर जीः– चलो सब लोग निकलों, सुखारी, अर्जुन, लखपतिया, जो पढ़ायेगें वो पढ़ना। चलो पढ़ा आ ई उ, ऐ उः अः .... तीनों सो पाते है। सुखारी शुरू करे आ ई ..... अ से आम क से कबूतर ई ईमली उ से उल्लू और च से चन्दा।

चन्दः– नहीं नहीं नहीं।

मास्टर जीः– अरे चन्दा सुनो तो फिर तुम रोज की तरह छुप कर कक्षा सुन रही हो। मार पढ़ती है चलो आप की छुट्टी।

दृश्यः (मास्टरजी का सुखिया के घर आना)

मास्टर जीः– अरे सुखारी... अरे सुखारी..

दुखियाः अरे मास्टरजी .... आये न

मास्टर जीः– तुम्हारी बिटिया यहाँ कहाँ हैं?

मुखियाः– अरे मास्टर जी उसने कुछ कर दिया है क्या? आजकल वह बहुत झगडे करती रहती हैं।

मास्टर जीः– अरे तुम्हारी बिटिया स्कूल नहीं आती है ?

दुखियाः– मास्टर जी चन्दा तो बहुत ही चाहती है कि स्कूल जाय और पढ़े, लेकिन लखपतिया के बापू समझ ही नहीं पा रहे है।

मास्टर जीः– तुम्हारी बेटी चन्दा बहुत ही होशियार है उसे पढ़ाओं।

सुखियाः– अरे मास्टर साहब के लिए कुछ चाय पानी पिलाई की नहीं। आइए–2 मास्टर साहब और ठीक है ना लखपतिया पढ़ने में अच्छा है?

मास्टर जीः– ये सब तो ठीक है एक बात तो बताओ ? सुखिया

सुखियाः– जी मास्टरजी जी?

मास्टर जीः– क्या सुखिया तुमने अपनी बेटी का स्कूल में दाखिल कराया ?

दुखियाः– स्कूल में दाखिला ? दाखिला .....
आप कैसी बाते कर रहे हैं ?

मास्टर जीः– मैं समझ गया, तुममे अभी तब चन्दा का नामांकन नहीं कराया, मैंने बहुत दिनों एक चीज नोटिस किया कि वह पीछे से खिड़की के पास छुपछुपकर सीखती रहती है और चंदा बहुत ही होनहार है, वह लाखो में एक है, वह काफी ही कुशाग्र बुद्धि की लड़की है।

सुखारीः– हमारी बेटी चन्दा ? आज मैं उसकी टाँगों को तोड़ दूँगी।

मास्टर जीः– नहीं नहीं तुम्हारी बेटी तो काफी होनहार है, तुम्हारी बेटी तो एकलव्य से भी आगे है।
एकलव्य तो मुरत बनकर सीखा था। तुम्हारी बेटी तो एकलव्य से भी आगे निकलेगी।

सुखारीः– मास्टर जी चन्दा, वह तो लड़की है

मास्टर जीः– अरे लड़के, पीटी ऊषा, कल्पना चावला, लता मंगेसकर सब जो लड़की है। लड़का लड़की में कोई भेदभाव नहीं है अपना समाज कहाँ से कहाँ चला गया।

सुखारीः– 14 साल में उसकी शादी करा दूँगा।

मास्टरजीः शादी अरे चन्दा तो बच्ची है उसकी उम्र ही क्या है उसके पढने लिखने के दिन है पता है कम उम्र में शादी करना जुर्म है। इसे करने वाला, करवाने वाला, तथा इस शादी में शामिल होने वाले सभी को जेल हो सकती है। हमारी बात मान अभी चन्दा की उम्र ही क्या है ? अभी भलाई इसे मे है कि चन्दा का दाखिल स्कूल मे करा दो तुम्हारा लखपतिया भी तो स्कूल आता है। समझे तो कल ही उसका दाखिल स्कूल में करा देना।

दुखियाः– अरे सुनिए न मास्टर जी बात कह रहे है हमको लगता है कि अपनी चन्दा का दाखिल स्कूल में करा देना चाहिए कराइएगा न.....

मास्टरजीरू एक बात तुमने कुम्हार को घड़े सानते देखा है।
अगर उस कच्चे घड़े में पानी डालोगे तो क्या होगा ?
ठीक उसी प्रकार कम उम्र में शादी करना उस घड़े के समान है किसी भी तरह से यानि मानसिक, शारीरिक रूप से परिपक्व नहीं होती है इसलिए लड़की की शादी 18 से कम उम्र में कतई नहीं और लड़कों की शादी 21 के बाद ही होनी चाहिए। आजकल तो सरकार ने कई प्रकार के कार्यक्रम भी चला रखे है जैसे लाडली लक्ष्मी योजना, राष्ट्रीय सर्व शिक्षा अभियान, मुख्यमंत्री कन्या दान योजना और तो और सरकार मुफ्त शिक्षा भोजन पोषक इत्यादि भी दे रही है तो समझे कल ही उसका दाखिल करा देना।

सुखारीः– ठीक है लेकिन हमारी एक शर्त है ?

दुखियाः– क्या ?

सुखारीः– चन्दा स्कूल से सीधे घर आएगी समझी ?

दुखियाः– ठीक है चन्दा आएगी .....

चन्दाः– क्या है .....मैं स्कूल जाउंगी।

दुखियाः– तु कल से स्कूल जाएगी।

चन्दाः– क्या? स्कूल? मैं स्कूल जाऊँगी।

दुखियाः– हाँ तुम स्कूल जाओगी।

चन्दाः– ऐ– ऐ– ऐ– ऐ .....

लखपतियाः– क्या है लखपतिया, बाप के पॉकेट से निकालता हूँ सौ टकिया। जल्दी आ जाना ?

गीतः– थौड़ा जाल .....
अब 14 वर्ष की चन्दा आठवीं क्लास में आ गई। पढ़ाई मैं काफी तेज होने के कारण चन्दा को सभी प्यार करते है।

सोनूः– अरे चन्दा, कहाँ रहते हो, मैं तुझे कितने जगह पर ढूंढा/ मुझे अपना नोट देना/ स्कूल के बाहर भी ढूंढा।

चन्दाः– तुम अपना नोट क्यों नही लिखते। अच्छा सोनू तुम इतना अच्छे से पढ़ते हो, फिर नोट क्यों नहीं लिखते हो।

सोनूः– समय नहीं मिला।

चन्दाः– अच्छा ले लो।

सोनूः– अच्छा, मास्टर साहब ने जो नोट्स वे कहाँ लिखा है।

सोनूः– मैं 1–2 दिन में दे दूँगा, चन्दा।

लखपतिः– बाबा बाबा, माँ माँ

माँः– क्या हुआ लखपतियां।

लखपतियाः– बाबा कहाँ है?

माँः– बाबा खेत पर गये हैं ?

लखपतियाः– आजकल चन्दा स्कूल के बाहर लड़को से मिल रही है, उसका जाना बन्द करो।

माँः– आखिर बात क्या है।

लखपतियाः– माँ, आज चन्दा स्कूल के पीछे पहाडों पर सोनू से हँस–हँस कर बाते कर रही है ?

माँः– क्या बाते कर रही थी।

लखपतियाः– वो मैं नहीं सुना, पर उसका स्कूल जाना बन्द कर दो।

माँः– स्कूल जाना बन्द कर दूँ।

लखपतियाः– मैं बाबा को बताऊँगा।

माँः– बेटा, मैं बाबा से बात कर लूँगी। तुम हाथ मुँह धो लो मैं तेरे लिए खाना लगाती हूँ। तु बहुत भूखा होगा ना।

लखपतियाः– लेकिन माँ तुम चन्दा को समझा देना।

माँः– अच्छा आने दो मैं भी पूछती हूँ कि वो कर क्या रही थी ?

चन्दा - प्रवेश

माँ – चन्दा तुम पहाड़ी के पीछे क्या कर रही थी।

चन्दाः– पहाड़ी के पीछे

माँ – कौन था तुम्हारे साथ

चन्दाः– अरे सोनू था, मैं वो क्लास के नोट्स मांग रखा था

माँः– लेकिन बेटी संभलकर कही ऐसा न हो तुम्हारे बाबा.....नाराज न हो जाये..... ऐसा कर कि तू कपड़े बदल मैं तेरे लिए खाना लगाती हूँ।

दृश्य : क्लास में बच्चे झगड़ते रहते है।

मास्टर जीः– शान्ति – शान्ति– अरे शान्ति अरे ये स्कूल है कोई सोनपुर का मेला नहीं। शान्ति बनाए रखो। हाँ बेटा अर्जुन.....

अर्जुनः– हाँ मास्टर जी

मास्टर जीः– हाँ दो कदम आगे आना बेटा।

अर्जुनः– आ गया मास्टर जी

मास्टर जीः– अरे ईधर आ बेवकुफ, मेरे पास अरे इतने पास नहीं दूर रह, अरे तुम्हे परीक्षा में कितने नंबर मिला होगा।

अर्जुनः– 50 होगा मास्टर जी

मास्टर जीः– 50 होंगे।

अर्जुनः– 30 होंगे मास्टर जी

मास्टर जीः– 30 होंगे अति उत्तम और सोच तेरे दिमाग में और कुछ तों नहीं

अर्जुनः– 25 होंगे।

मास्टर जीः– 325 होंगे अरे नालायक है तू स्कूल से भागकर मेला जाता है तू दो विषय में फेल है। आ बेटे लखपतिया, तू तो लखपतिया है तू तो सारे विषय में फेल हो गया है, कल अपने बाबा को बुलाकर लाना।

लखपतियाः– किसको

मास्टर जीः– अपने बाबा सुखिया को।

अपने बाबा सुखिया को बुलाकर लाना। जैसा बाप वैसा बेटा।

घंटी बजती है, सारे बच्चे आपस मे बातचीत करते है नोकझोक करते है। क्या यार मैं तो एक विषय में फेल हूँ या दो विषय में फेल और लखपतिया सारे विषय में फेल और मास्टर साहब ने बाबा को बुलाने को कहा है अब क्या करूँ क्या करूँ।

सोनूः– चन्दा मैं तेरे ही घर जा रहा था। अरे ठीक हुआ कि तुम यही पर मिल गई। पता है कि मैं अच्छे नंबरों से पास कर गया। और तुम भी तो पूरे स्कूल में टॉप पर आयी हो ?

चन्दाः– अच्छा सच ऐ तो बहुत ही खुशी की बात है।

सोनूः– हाँ तब तो तुम को मिठाई खिलाना पड़ेगा। मैं तो सोच लिया है कि बड़ा होकर बनूँगा इंजीनियर।

चन्दाः– इंजीनियर

सोनूः बड़ी बड़ी इमारते बनाऊंगा, सडके बनाऊंगा, मैं अपने गाँव के लिए भी एक सडक बनाऊंगा जो तुम्हारे घर से होकर गुजरेगी?

चन्दाः– सच मेरे घर से गुजरेगी.....

सोनूः अच्छा चंदा तुम क्या बनोगी

चंदाः मैं पढ़ लिख कर बहुत कुछ करना चाहती हूँ। मैं सपनों की दुनिया में उड़ना चाहती हूँ। इन रंग भरे बादलों में घुल–मिल जाना चाहती हूँ। मैं माँ बाबा भाईयों के लिए कुछ करना चाहती हूँ।

सोनूः– लेकिन तुम बनोगी क्या ?

चन्दाः– मै ....सपनों की दुनिया में उड़ जाना चाहती हूँ। मै..... इन रंग भरी दंनिया में उड़ जाना चाहती हूँ और सबके लिए खुशियाँ बटोर कर लाना चाहती हूँ।

सोनूः– और मै। तेरे सपनो को बरखा से बचाने के लिए छाता लेकर आऊँगा।

गीतः– सपनो की तितली के पर लगाकर नाचेगी चन्दा गुन गुनाकर।

लखपतियाः– प्रवेश (गुस्से मे देखता रहता है। चन्दा और सोनू को)

सोनूः– बात कर निकल जाता है।

लखपतियाः– बाबा–बाबा बाबा–बाबा

सुखियाः– अरे क्या हुआ लखपतिया क्यों चिल्ला रहे हो ?

लखपतियाः– मैं अपनी आंखों से देखा कि चन्दा आजकल सोनू के साथ अवारागिरी कर रही है और मैंने पहले भी कहा था कि चन्दा को स्कूल जाना बन्द करा दो।

सुखियाः– क्या यह बात तेरी माँ को पता है जिस बात से डर था वहीं हुई।

लखपतियाः– हाँ बाबा मैंने माँ को पहले भी बताया था।

सुखियाः– चन्दा–चन्दा तुम पहाडी के पीछे सोनू के साथ क्या कर रही थी।

चन्दाः– कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं

सुखियाः– जिस बात का डर था वही हुआ अब से तुम्हारा स्कूल जाना बंद। मैं जा रहा हूँ तेरे शादी के लिए तारीखे तय करने .....
अरे लखपतिया, तुम्हारी माँ कहाँ है बुलाकर लाओं।

गीतः– अंधेरी धुन के साज को बहता किसने सुना।

सुखियाः– अरे चन्दा क्या कर रही है तुम कोठरी में खड़ी होकर, लड़के वाले आए है.....सुनाई नहीं दिया ।

चन्दाः– बाबा मैं शादी नहीं करूँगी।

सुखियाः– मैं बाप हूँ या तुम ? शादी करेगी।

चन्दाः– मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ, आगे बढ़ना चाहती हूँ।

सुखियाः– लड़के वाले आए है मैं क्या मुँह दिखाऊँगा? शादी तो होकर रहेगी, सुनायी नहीं देता क्या ?

चन्दाः– लेकिन बाबा मैं नाबालिग हूँ आप मेरे साथ जोर जबरजस्ती नहीं कर सकते ?

सुखियाः– तू मुझे कानून सिखाऐगी ? मैं तेरा बाप हूँ कि तुम मेरा बाप?

चन्दा:– बेशक आप मेरे बाप है लेकिन मेरे भी अपने सपने है मुझे आगे पढ़ना है और अभी ये शादी गैर कानूनी है मैं बालिग नहीं हूँ, कानूनन अपराध हैं।

सुखिया:– कैसे शादी नहीं करेगी ? चल

नाटक इस दृश्य के साथ थम जाता है और जोकर यानि विदूषक लोगो से पूछता है

- क्या नाटक में जो हो रहा है क्या वो ठीक है ?
- अगर नहीं तो चंदा को इसका विरोध करने के लिए क्या करना चाहिए ?
- जो लोग जवाब देना चाहते है उन्हें बीच में बुलाये और उन्हें चंदा का किरदार निभाने के लिए कहे, की वो किस तरह से अपने बापूजी से अपनी बात रखेगे?
- जो आये उनका जोरदार से स्वागत तथा प्रोत्साहन दीजिये ? विदूषक के नाते कोशिश कीजिये की अलग अलग तपके और उम्र के लोग आये और अपनी सोच अभिनय करके दिखाए।
- इससे एक ही नाटक के कई अलग अलग अंत हो सकते है।
- यह सुनिश्चित करें की लोग जो चंदा की भूमिका निभा रहे है वह सकारात्मक समाधान ही रखे।
- अगर नकारात्मक जवाब आये तो वापस लोगो से पूछे की क्या यह सही समाधान था।
- सबको धन्यवाद् करें और नाटक की समाप्ति करें।

बिहार सरकार

समाज कल्याण विभाग